टी. बी. का... पहला पाठ

टी.बी. का मरीज बीमारी को फैलने से कैसे रोके?

1. ज्यादा से ज्यादा समय बाहर ताजी हवा में रहो– जैसे खुले में, पार्क में, छत पर, खेत में, आंगन में या किसी पेड़ के नीचे। अगर मौसम सही है तो रात को भी बाहर सो जाओ।
2. खाँसी करते समय मुंह पर रूमाल रखो।
3. बंद कमरे में न रहो। भीड़–भाड़ से दूर रहो। इधर–उधर कभी मत थूको।
4. छोटे बच्चों को गोद में उठाना, चूमना या साथ सुलाना उचित नहीं है।
5. नशे से दूर रहो जैसे बीड़ी, सिगरेट, गुटका, तम्बाकू व शराब इत्यादी।
6. अच्छा सन्तुलित खाना खाओ जैसे–दूध, हरी सब्जी, दाले व फल आदि।
7. टी0बी0 का इलाज है। दवाई नियम से 6 से 8 महीने खानी चाहिए।
8. महीने, दो महीने के इलाज से ही काफी आराम आ जाता है। लेकिन इलाज पूरा करो– 6 से 8 महीने। बीच में कभी न छोड़ो।
9. इलाज के हर 2 महीने होने पर बलगम की जांच करवाओ।

सावधानी बरतने की सबसे अधिक आवश्यकता फेफड़े के उन टी. बी. रोगियो को है, जिनकी बलगम में कीटाणु जा रहे हैं यानी जो स्पूटम पॉजिटिव हैं। फेफड़े के कुछेक मरीज जिनकी बलगम में कीटाणु जाएं बीमारी फेलाते हैं।

फेफड़े को छोड़ जब टीबी दूसरे अंगों में होती है तो यह एक से दूसरे को नही फैलती। यानि हड्डी, जोड़, गुर्दा, गाँठ, दिमाग, जिगर, आतड़ी या पेट इत्यादी की टी.बी. के मरीज दूसरों में संक्रमण नहीं करते।

डा. रमन कक्कड़

पुस्तक का विमोचन बी.के. अस्पताल फरीदाबाद में टी.बी. विभाग के स्वाथ्य कर्मियों की पूरी टीम की उपस्थिति में श्रीमति शशी बाला टी.बी. एच.वी. के द्वारा 14 अप्रैल 2014 को किया गया क्योंकि सयोंगवश उसी दिन उनका जन्मदिन था।

Concept, Compiled, Edited & Published by: Dr. Raman Kakar

Designed By : **Pawan Baghel**

Printed By : JACK OFFSET WORKS | 668A, Gali No. 82, Sanjay Colony, Sector-23, Faridabad **M : 9871099111**

पढ़ कर पुस्तक वापिस करें!

गाँठों की टी.बी.

ज्योति
टी.बी.एच.वी.

ज्योंहि शशि ने गर्दन से चुन्नी हटाई तो मैं घबरा गई । एक संतरे के बराबर गोल–2, लाल–2 गाँठ उठ आई थी, उसकी गर्दन के साईड में, कान के नीचे और कंधे के ऊपर ।

"अरे ! ये क्या है ?" मैं चौंकी । शशि बोली, "जी कुछ दिन पहले से यह गाँठ अपने आप से उठ गई है और बढ़ती जा रही है । दर्द भी होता है ।" मैंने हैरानी से फिर पूछा, "कब से ?" शशि ने उत्तर दिया, "जी करीब महीना होने को आया है । मेरी तबीयत तो पिछले चार महीने से खराब है । बुखार आता जाता रहता है । भूख नहीं लगती और मैं कमजोर होती जा रही हूँ ।"

मैंने डरते–2 उस गाँठ को अपनी उँगली से छूकर महसूस किया । वो काफी सख्त, लाल व गर्म–2 थी । इतने में डॉ0 रमन कक्कड़ एक सिरिंज उठा लाए । उसमें मोटी सुई फिट की और उस सूई को गाँठ में घोंपकर उसमें से पीले रंग का पानी खींचा । सूई को 3–4 दिशाओं में घुमा करके पानी के सेंपल लिए । फिर उस पानी या मवाद को शीशे की छोटी सी स्लाइडों पर बिछाया । उन्हें सुखाने के बाद भिन्न–2 रंगों के रासायनिक पदार्थ डाले । बाद मे उन रंगदार स्लाईडों को माइक्रोस्कोप (सूक्ष्मदर्शी यंत्र) में फिट करके अच्छी तरह से देखा व जाँच की ।

"इस पूरी प्रक्रिया को कहते हैं : FNAC ।"

डॉ0 साहब ने समझाया, "फेफड़े को छोड़कर जब टी.बी. दूसरे अंगों में पनपती है तो इसकी पहचान खास टेस्टों द्वारा होती है जिसे कहते हैं बायाप्सी तथा हिस्टोपैथोलॉजी / यानि बीमार अंग का छोटा सा टुकड़ा लेकर उसकी जाँच करना । FNAC यानि सूई से पानी खींचना सबसे पहला साधारण कदम होता है । अगर इसी से बीमारी के सबूत मिल जायें तो फिर अंग का टुकड़ा लेने के झंझटों से बचा जा सकता है ।"

भाशि की FNAC रिपोर्ट में टी.बी. घोशित हुई । इलाज चालू हुआ । तीन महीने हो चुके हैं, उसे अब काफी आराम है । गाँठ दिखने में काफी छोटी होती जा रही है । बुखार टूट गया है । भूख लगती है । शशि अच्छे स्वास्थ्य की ओर तेजी से अग्रसर हो रही है ।

चूंकि शशि को गाँठ की टी.बी. है तथा उसे ना तो खाँसी है ना बलगम और ना ही फेफड़े में कोई दाग है, इसलिए शशि के बच्चों को संक्रमण का रत्ती भर भी खतरा नहीं है ।

6 महीने.... वर्ना 24 महीने

पवन कुमार,
सीनियर टी0.बी0. लैब सुपरवाईजर,
जनरल अस्पताल एम्स बल्लभगढ़

विजेन्दर बहुत दुखी स्वर में बोला "खाँसी से बहुत परेशान हूँ जी। बुखार सा बना रहता है। कमजोर होता जा रहा हूँ। काम वाम करने से बहुत थक जाता हूँ, साँस फूल जाती है। कई महीने हो गये।"

मुझे टी.बी. के तीनों लक्षण साफ–साफ दिख रहे थे–लम्बी खाँसी, लम्बा बुखार तथा वनज का घटना। मैंने पूछा, "परिवार में पहले कभी टी.बी. की बीमारी हुई है क्या ?" बिजेन्द्र बोला, "जी मैं खुद पिछले साल टी.बी. की दवा 3 महीने खा चुका हूँ परन्तु इलाज पूरा नहीं किया।"

मेरा शक पक्का हो गया कि हो ना हो इसे दोबारा टी.बी. का प्रकोप बन गया है। केवल 2 घंटे बाद उसकी बलगम की जाँच की रिपोर्ट आ गई। उसमें टी.बी. के कीटाणु मौजूद थे सो बीमारी की पुष्टि हो गई। बलगम में टी.बी. के कीटाणु पाये जाना टी.बी. की बीमारी का सबसे उत्तम सबूत होता है। मामूली सी दिखने वाली यह बलगम की जाँच बहुत महत्वपूर्ण होती है। बिजेन्द्र ने अब की बार इलाज सही ढंग से लेना चालू कर दिया। इलाज के 3,5,8 महीनों पर उसकी बलगम की जाँच हुई जो शुद्ध (यानि कीटाणु–रहित) पाई गई। उसका स्वास्थ्य दिनोंदिन सुधरता गया। वह अन्त में खूब मोटा ताजा हो गया।

अभी हाल ही में वो अपने पिताजी को लेकर आया। जिसने पिछले वर्ष विजेन्द्र की ही तरह वही आराम हो जाने पर वृन्दावन का टी.बी. का इलाज अधूरा छोड़ दिया था। उसकी भी बलगम की जांच में कीटाणु पाए गये।

मैंने बाप बेटे को बैठा कर समझाया, "बार–बार टी.बी. का ईलाज बीच में छोड़ देने से टी.बी. एक भयंकर रुप धारण कर सकती है। जिसे कहते हैं एम.डी.आर. यानि लाईलाज टी.बी.। यानि दवाई बेअसर हो जाती है। दवा पानी बन जाती है। ऐसे में बहुत मंहगी–मंहगी गर्म दवाई 2 साल (यानि 24 महीने) तक खाने की नौबत आ जाती है।"

बिजेन्द्र बोला, "6 माह वाले इलाज में चूक होने पर 8 महीने। अगर फिर चूके तो सीधे 2 साल (यानि 24 महीने) का इलाज। हे भगवान इतना लम्बा इलाज! सोचकर ही मेरी रुह कांप जाती है।"

बिजेन्द्र के पिता जी बोले, "हम इस 24 महीनों वाले झमेले में कतई नहीं पड़ना चाहते जी। अब लगकर 8 महीने दवाई करुँगा। एक भी नागा नहीं करुँगा। किसी प्रकार के नशे को हाथ नहीं लगाऊँगा। संतुलित खाना खाऊँगा। बस मुझे ठीक कर दो जी।" सौभाग्य से बाप–बेटे दोनो ठीक हो गए व आज भी ठीक–ठाक हैं।

चुल्हेनौत टी.बी.

विजय पाल
टी.बी.एच.वी., सरकारी
अस्पताल एम्स बल्लभगढ़

"डाक्टर साहब, आप मुझे बेकार सी दवाई दे देते हो। ढंग की बढ़िया दवाइयाँ दो ना। आपकी दवा से मैं बस महीना भर ठीक रहा। अब फिर वही खाँसी, बुखार, कमजोरी। "

बिरम सिंह की बात सुनकर मुझे बहुत गुस्सा आया। पूरे बल्लभगढ़ में इतना लापरवाह मरीज दूसरा कोई ना था। 4 महीने पहले इसकी बलगम की जाँच में 3 प्लस कीटाणु मिले थे और मैंने इसका टी.बी. का इलाज चालू किया था। मेरे लाख समझाने पर भी यह बाहर ताजी हवा में रहने की बजाए अपने छोटे से बंद कमरे में 4 छोटे–छोटे बच्चों के साथ लेटा रहता था। मुँह पर कभी रुमाल नहीं बांधता था। मुँह खोलकर खाँसता रहता था और वहीं कमरे में ही 24 घण्टे थूकता रहता था। रोज शाम को दारु भी पीता था। इतना ही नहीं, जब इसको काफी आराम आ गया तो इसने अपना दवा का कोर्स बीच में ही छोड़ दिया। इसके घर के कई चक्कर लगाने के बावजूद मैं इसे मनाने में सफल न हो पाया व इसका इलाज पटरी पर नहीं ला पाया। कई महीनों के अंतराल के बाद आज अचानक ये टपक पड़ा है और उल्टे डॉटस की दवाईयों को दोष दे रहा है, मुझे कोस रहा है।

खैर, मैंने इसका पुराना खाता (टी.बी. नं0 727/06) निकाला तथा फिर इसकी दोबारा जांच करवाई। टी.बी. का प्रकोप बहुत बढ़ा हुआ पाया गया। बलगम में फिर 3 प्लस किटाणु मिले। मैंने इसको कसमें दिलवाकर, खूब समझा बुझा कर दोबारा दूसरी श्रेणी में डालकर इसका इलाज चालू करवा दिया (टी.बी. नं0 627/07)। लेकिन यह सुधरने वाला कहाँ था। 2 महीने बाद थोड़ा ठीक होने पर बीरम सिंह फिर गायब हो गया। खुद तो नहीं आया पर बाद में बुरी खबर आई कि वह परलोक सिधार गया है। लेकिन जाते–2 मानो अपनी वसीयत में अपनी बीमारी अपनी पत्नी सोनिया को दे गया। जिसका ईलाज टी.बी. नं0 770/08 के तहत मैंने शुरु किया। देखते ही देखते उसकी तीन बेटियाँ मीनाक्षी (टी.बी. नं0 187/09), दीप्ति (टी.बी. नं0 198/09), विद्या (टी.बी. नं0 199/09) भी इलाज के लिए मेरे पास चली आई।

उसका बेटा सुमित भी बीमार पड़ गया (टी.बी. नं0 200/09)। बिरम सिंह के भाई विजेन्द्र की दो बेटियाँ भी टी.बी. के लपेटे में आ चुकी थी–चंचल (टी.बी. नं0 224/09), और नीमा (टी.बी. नं0 225/09)। उसके दूसरे भाई राजेन्द्र का बेटा साहिल भी टी.बी. से पीड़ित हुआ (टी.बी. नं0 201/09)। उसके भाई गजेन्द्र खुद का भी इलाज चला (टी.बी. नं0 318/11) जो किन्हीं कारणों से सफल न हो पाया तथा अब उसका ऊपरी श्रेणी का इलाज चल रहा है (टी.बी. नं0 335/12)

सरासर लापरवाही के चलते बीरम सिंह ने अपनी अलिखित वसीयत में अपने परिवार के कम से कम 9 सदस्यों को टी.बी. की बीमारी विरासत में दे दी। 2009 में इस परिवार के छोटे–2 सात बच्चों का इलाज दिल पर पत्थर रखकर कैसे किया ये मैं ही जानता हूँ या मेरा भगवान जानता है। इनमें से एक बच्ची चंचल बेचारी को तो इलाज के बावजूद मैं बचा नहीं पाया।

अभी जंग जारी है।

ऊपरी मंजिल

शशि बाला
टी.बी.एच.वी., सिविल
डिस्पेंसरी ओल्ड फरीदाबाद

पापा तो घर में नहीं हैं । कहीं बाहर गए हैं।" राजकुमार के बेटे ने ऊपरी मंजिल के घर से मुझे कहा। मैं बहुत निराश हुई, ये मेरा तीसरा चक्कर था जो व्यर्थ जा रहा था। मैं हर बार सीढ़ियों के नीचे से ही राजकुमार को आवाज लगाती और हर बार उसकी बीवी या बच्चे सीढ़ियों से भाग कर नीचे आते और उनका यही जवाब होता कि राजकुमार कहीं गया है।

30 साल के राजकुमार का ईलाज टी.बी. नं0 69/10 के तहत मैंने जनवरी में शुरु किया था। 3 महीने तक ठीक से दवा खाने के बाद जब उसको काफी आराम आ गया तो वो दवाई लेने में गड़बड़ करने लगा था। अभी उसका 3 महीने का ईलाज बाकी था। इसी उधेड़बुन में मैं सीढ़ियों के पास ही खड़ी थी कि उपर से किसी के खाँसने की आवाज आई। मैं एकदम चौंक गई। मुझे लगा यह राजकुमार ही खाँस रहा है। ये चक्कर क्या है ? बच्चा भाँप गया और बोला, "जी, ये हमारे चाचा जी खाँस रहे हैं।" लेकिन अब मैं रुकने वाली नहीं थी। मैंने सीढ़ियाँ चढ़ी और झटके से दरवाजा खोल दिया। देखा, सामने राजकुमार बैठकर ठाठ से शराब पी रहा है। अपने गुस्से पर काबू पाते हुए मैंने कहा, "राजकुमार जी टी.बी. का ईलाज कम से कम 6 महीने चलता है, बीच में अधूरा छोड़ देने से बीमारी दुबारा पनप जाती है। और यह शराब तो तुम्हारे लिए जहर के बराबर है। तुमने वादा किया था कि तुम जिन्दगी में दोबरा शराब नहीं पियोगे।" राजकुमार ने जवाब दिया, "पहली बात तो मुझे टी.बी. थी ही नहीं। मान लिया कि हल्का सा इंफेक्शन था तो अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ "मैंने उसे समझाया कि, "तुम्हें 4 महीने से खाँसी थी, बुखार था, वजन 5 किलो गिर गया था। ये सारी टी.बी. की ही तो निशानियाँ हैं। और फिर तुम्हारी बलगम की जाँच में टी. बी. के किटाणु पाये गये थे जोकि इस बीमारी के होने का पक्का सबूत होता है। जब एक बार बलगम में कीटाणु मिल जाऐं तो किसी दूसरी बीमारी होने का तो सवाल ही नहीं उठता–शर्तिया टी.बी. ही है, समझे। अब चुपचाप ये दवाई खाते चले जाओ, बस कुल 3 महीने और।" राजकुमार बहुत ढीठ निकला। उसने बेशर्मी से शराब का गिलास उठाया तथा मेरे देखते देखते ही एक सांस में गटक गया, और दवा न खाई।

कुछ महीनों बाद मुझे खबर मिली कि राजकुमार स्वर्ग सिधार गया है। जब कभी भी मैं उधर से गुजरती हूँ, राजकुमार की पत्नी मुझे रोक लेती है और रोने लग जाती है और बार–बार यही दोहराती है, "शशी दीदी, अगर समय रहते हम आपकी सलाह मान लेते तो आज हमें ये दिन ना देखना पड़ता।"

तकदीर का खेल

रमेश चन्द माहौर
(टी.बी. एच. वी.)

भगवान जब देता है तो छप्पड़ फाड़ के देता है । ऐसा ही कुछ नवीन के साथ होता आया है। 6 व र्ा की छोटी सी उम्र में आँखों की रोशनी चली गई फिर उसके वृद्धि (ग्रोथ) हार्मोन का स्त्राव कम होने से वह आज दिखने में मात्र 12–13 व र्ा का लगता है हालांकि उसकी असल उम्र 26 व र्ा है। बेहद असामान्य व्यक्ति।

करीब 2 महीने पहले इसकी छाती की बाईं तरफ दर्द रहने लगा । धीरे–2 सूजन आ गई और एक लाल रंग की गाँठ सी उभर आई थी । बुखार व कमजोरी भी आने लगी थी । उसकी थकी हारी बूढ़ी माँ जान चुकी थी कि ये उठाव कोई मामूली फोड़ा–फुन्सी नहीं है, और उसे लेकर सीधे बी.के. अस्पताल में आ गई । अस्पताल में उसकी सूई डालकर FNAC की जाँच हुई तो पता चला कि उसे टी.बी. है । जिसकी वजह से अंदर ही अंदर वहाँ मवाद पड़ गई है, जिसे कहते हैं "कोल्ड ऐबसैस" । जब ये बीमारी फेफड़ों के बाहर हड्डी या माँसपेशियों इत्यादि में होती है, तो कम से कम ये फैलती नहीं है । इसका हमने टी.बी. का इलाज शुरु किया है । अब देखें आगे तकदीर नवीन से और क्या–2 खेल–खेलती है ।

चुपके – चुपके

रेखा रानी
टी0बी0. हेल्थ विजिटर, डाट्स सेन्टर, जच्चा–बच्चा अस्पताल,

टी.बी. का नाम सुनते ही फूल सिंह और उसकी पत्नी दोनों को मानो साँप सूँघ गया। दोनों की बोलती बंद हो गई। मैंने अपना सवाल फिर दोहराया, "पहले टी. बी. का ईलाज कहाँ–2 से करवा चुके हो ?" बड़ी मुश्किल से काफी देर के बाद फूल सिंह उदास होकर मन्द स्वर में बोला, "टी.बी. ? टी.बी. तो मुझे कभी हुई नहीं। खानदान में कभी किसी को नहीं हुई। मुझे तो दो–तीन साल हो गए डॉक्टरों के चक्कर लगाते हुए। टी.बी. की तो किसी ने नहीं बताई।

मैं दंग रह गई। फूल सिंह की बलगम की रिपोर्ट में 3 प्लस कीटाणु भरे पड़े थे। एक्स–रे में बड़े–बड़े दाग थे और उसके थैले में जितनी भी दवाऐं थी सब की सब टी.बी. की ही थी। मैंने हैरान हो कर पूछा, "यानि टी.बी. का ईलाज तो चालू है पर आपको बताया नहीं कि वे डॉक्टर टी. बी. का ईलाज कर रहे हैं ?" संयोगवश, पास में हमारे मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा0 एस.एल. मेहरा बैठे सारी बात सुन रहे थे। वह भड़क कर बोले, "टी.बी. जैसी लंबी बीमारी का ईलाज तो चुपके–चुपके करना संभव ही नहीं है। जब तक मरीज को बताया न जाए कि उसे टी.बी. जैसी खतरनाक बीमारी लग चुकी है, क्या कोई मरीज 6 महीने का लंबा ईलाज चुपचाप कराता चला जाएगा ? मरीज व उसके परिवार को पहले ही दिन साफ–2 बता देना चाहिए कि टी.बी. है, तभी तो वो लगकर इस लंबे ईलाज को पूरा करेगा। और फिर, बिना बताये, टी.बी. की सावधानियाँ मरीज कैसे बरतेगा ? क्या वो दूसरों को बीमार नहीं कर देगा ? बिना बताये टी.बी. का ईलाज शुरु कर देना तो एक पाप है। किसी डॉक्टर या स्वास्थ्य कर्मचारी को ऐसा कदाचित नहीं करना चाहिए " कहकर डा0 मेहरा चले गये।

क्योंकि फूल सिंह का स्पूटम पोजिटिव था यानि वो बीमारी का संक्रमण करने में सक्षम था, इसलिए मैं उसे व उसकी पत्नी को लेकर बाहर खुल में ताजी हवा में एक पेड़ के पास लेकर आ गई। वहाँ मैंने उसे टी.बी. की सावधानियाँ समझाई – खाँसी करते वक्त मुँह पर रुमाल रखना, बाहर खुले में रहना, भीड–भाड़ व बच्चों से दूर रहना इत्यादि। उसका (टी.बी. नं0 1104/07) दूसरी श्रेणी का ईलाज शुरु किया और वो ठीक हो गया। शायद बीड़ी व शराब पीने की वजह से कुछ समय बाद दुर्भाग्यवश उसको दोबारा स्पूटम पोजिटिव टी.बी. हो गई तथा टी.बी. नं0 1244/08 के तहत उसका दोबारा इलाज चला। अबकी बार उसने प्रण किया कि पूरे जीवन में कभी कोई नशा नहीं करेगा। वो दिन था और आज का दिन है उसने बीड़ी व शराब को कभी छुआ तक नहीं। आज फूल सिंह काफी तंदरुस्त दिखता है। अपने बीवी बच्चों के साथ कभी कभार हमारे सैक्टर–30 वाले जच्चा–बच्चा सैन्टर में आता जाता रहता है लेकिन वह मुझे आशीर्वाद दिए बिना नहीं जाता।

थकना मना है

मनोज
टी.बी.एच.वी.

एक तो दीपावली, फिर विश्वकर्मा और आज भैया दूज। त्योहारों व छुटिट्यों की तो जैसे बहार आई हुई थी। फरीदाबाद के मध्य स्थित नीलम चौक पे तो इतना ट्रेफिक था कि पूछो मत। सारे ऑटो खचाखच भरे हुए थे। मैं किसी में बैठने की हिम्मत न जुटा पा रहा था।

उल्टी दिशा में जाते एक दाड़ी वाले ऑटो वाले ने मुझे देख अचानक ब्रेक मारी और जोर से पूछा, "कहाँ जाना है ?" मैं चिल्लाया, "बदरपुर।"

उसने ऑटो घुमाया मुझे बैठाया और बिना किसी दूसरी सवारी का इंतजार किये सरपट चल दिया। अरे वाह री मेरी किस्मत। लगता है इसे भी बदरपुर में ही अपनी बहन से राखी बंधवाने की जल्दी है। रास्ते में बस इक्का दुक्का सवारी ही उठाई। नतीजा डेढ़ घंटे की बजाय 25 मिनट में ही मुझे बहन के घर के ठीक सामने उतार दिया। मैंने पैसे दिये तो ऑटोवाला बोला, "जी किराया नहीं लूँगा।" मैं बहुत हैरान हुआ । मेरे चेहरे के हाव भाव देखकर वह ऑटो ड्राइवर जोर से हँसकर बोला, "डा0 साहब, सारे रास्ते आपने मुझे पहचाना नहीं। मैं आपका पुराना जिद्दी टी.बी. का मरीज, दिनेश चौहान – मास्टर जी का बेटा।" ओ हो ! धीरे–धीरे मुझे सब याद आ गया। कई साल बीत गए। दिनेश एक बहुत ही बिगड़ा हुआ लापरवाह टी.बी. का मरीज था। टी.बी. का डॉटस का इलाज एक बार अधूरा छोड़ चुका था। इसका दोबारा इलाज शुरु किया था। इसके पिता जो एक सुलझे हुए स्कूल मास्टर थे–बहुत परेशान थे, लेकिन निराश नहीं। एक दिन मुझसे बोले, "दिनेश को समझाइये कि बीच में टी.बी. का इलाज छोड़ने से उसका जीवन बरबाद हो जायेगा। भाई बहन और माँ–बाप को भी बीमारी लग जाएगी। जो विद्यार्थी नालायक हो उसे बार–2 लगातार पाठ पढ़ाना पड़ता है। जब भी दिनेश आपसे दवा का पत्ता खाने आए तो प्लीज हर बार इसे समझाना, डाँटना और मिसालें देना जी । शायद कुत्ते की दुम सीधी हो जाये ।"

मास्टर जी की नेक सलाह मैंने पल्ले बांध ली थी। दिनेश ही नहीं, अनेकों लापरवाह मरीजों पर मैंने सफलता पूर्वक–2 आजमाई थी। आज भी अनुसरण करता हूँ – समझाते समझाते कभी थकान महसूस नहीं करता। जब कोई मरीज बार–बार समझाने पर भी दवा में गड़बड़ करता है और मुझे गुस्सा आता है तो मैं मास्टर जी को यादकर शाँत हो जाता हूँ। संयम से एकबार फिर से मरीज को बैठाकर टी.बी.का पाठ पढ़ाता हूँ कि, "टी.बी. का इलाज बीच में कभी मत छोड़ो, अधूरा इलाज यानि सत्यानाश – अपनी जान को खतरे में मत डालो। अपने बीवी बच्चों व सगे सम्बन्धियों को इस बीमारी की चपेट में न झोंको।" मेरा मानना है कि "हमारे पेशे में थकना मना है।" आज दिनेश एक हट्टा कट्टा नौजवान ऑटो ड्राइवर है। दिनेश जैसे लापरवाह मरीज का एक दम ठीक हो जाना इस बात का प्रमाण है कि बस टी.बी. के मरीज को बार बार समझाते जाइये – सफलता जरुर मिलेगी। आखिर मरीज को कब तक समझाऐं ? तब तक, जब तक वह मान न जाए।

पेट : एक बन्द पिटारी

डा0 रमन कक्कड़
सम्पादक
(टी.बी. स्पेशलिस्ट)
बी.के. अस्पताल, फरीदाबाद

याम लाल को रह रहकर बार–2 पेट का दर्द उठ जाता, इंजेक्शन व दवा इत्यादि से थोड़ा थम जाता। दो एक महीने सही रहता पर फिर वही पेट का दर्द, साथ में उल्टियाँ । भूख तो उसको जैसे लगती ही नहीं था धीरे–2 कमजोर होता जा रहा था।

"डॉ0 साहब मुझे नर्सिंग होम में भर्ती रहना पड़ा। तीन दिन तक ग्लूकोज की बोतलें व मँहगे–2 इंजेक्शन लगते रहे । अब जाकर थोड़ा ठीक हूँ । अब आप आगे बताओं डा0 साहब।" श्यामलाल रो रहा था ।

पेट की अल्ट्रासाऊँड की रिपोर्ट में तीन विशेश कमियाँ पाई गईं थी :– चार गांठें, खाने की आंतड़ियों में सूजन तथा कुछ पानी का रिसाव । जो कुल मिला के पेट की टी.बी. झलका रही थी । मैंने श्यामलाल को समझाया, "तुम्हारी बिमारी 6–7 महीने लम्बी हो चुकी है, वजन कम हो गया है तथा अल्ट्रासाऊँड में भी टी.बी. होने की काफी हद तक पुश्टि हुई है ।

"टी.बी. ? जी डा0 साहब मेरे तो छोटे–2 बच्चे हैं उनको लग जाएगी ?" मैंने हंसकर जोर से बोला ताकि बाकी मरीजों की भीड़ भी सुन पाए, "जब टी.बी. पेट में हो तो वो दूसरों को नहीं फैल सकती । फेफडे को छोड़कर दूसरे अंगों की टी.बी. जैसे हड्डी, गाँठ या दिमाग की टी.बी. से कोई संक्रमण नहीं होता । तुमसे बच्चों को या किसी को रत्ती भर भी बीमारी का खतरा नहीं है । बस चैन से 6 महीने तक दवाईयाँ खाते जाना और सब ठीक हो जाएगा ।"

मैं बोलता गया, पेट में टी.बी. की बीमारी बढ़ती जाए तो कभी–कभी आँतों में बन्धा भी पड़ जाता है – इमरजेन्सी आप्रेशन तक करने की नौबत आ जाती है । शुक्र मनाओ, समय रहते तुम्हारी बीमारी का पता चल गया है – दवा से सब कुछ ठीक हो जायेगा ।"

गुजरा समय वापस नहीं आता

सविता
(टी.बी.एच.वी.)

2012 की दीवाली के आस पास विद्या देवी को गर्दन के पीछे दर्द सा रहने लगा । कुछ दिनों में ये दर्द ऊपरी पीठ में भी फैल गया। अगले महीने तक दाऐं बाजू में भी चीसें पड़ने लगी । गाँव में इधर–उधर से देसी इलाज किया । दर्द तो गया नहीं, बुखार व हरारत और शुरु हो गई । 3 बच्चों की माँ बेचारी बच्चों का खाना इत्यादि भी बहुत मुश्किल से पूरा–सूरा करती थी । 6 महीने होते–2 हालत बद से बदतर हो गई । विद्या की पूरी कमर जकड़ी गई । रोज शाम को बुखार आ जाता था । भूख कम लगती थी और कमजोरी बढ़ती जा रही थी । ज्यादा समय बिस्तर पर ही लेटी रहती थी । गर्दन, कमर और बाजू का दर्द अब टाँगों में भी फैल गया था । ऊपरी पीठ में गर्म–2 लाल–लाल सूजन (जैसे कोई अन्दरुनी फोड़ा हो) भी दिखने लगी । कमर में हमेशा टेढ़ापन रहता । बस, पूरे परिवार का हाल बेहाल हो गया, डॉक्टरों के काफी धक्के खाने के बाद आखिरकार 2014 में जाकर कहीं सफदरजंग अस्पताल में हड्डी रोग विशे ाज्ञ ने पहली बार जाँच की । सी.टी. स्केन और एम.आर.आई. करवाई तो पता लगा कि रीढ़ की हड्डी के ऊपरी भागों में टी.बी. की बीमारी ने हड्डियों के छल्लों को गलाकर रख डाला है ।

पति के पास एक पैसा भी नहीं था इलाज के लिए । मुफ्त इलाज के चक्कर में ढूँढते–ढूँढते आज बी.के. अस्पताल पहुँचे हैं । आज 15 अप्रैल 2014 को करीब डेढ़ साल बीमारी से जूझते रहने के पश्चात टी.बी. का इलाज चालू किया है मैंने । बीमारी की पहचान में देरी होना भारत में कोई नई बात नहीं है, बीमारी के लक्षणों की अज्ञानता के चलते अमूमन मरीज सही डॉक्टर के पास नहीं पहुँचते व बीमारी अन्दर ही अन्दर बढ़ती जाती है ।

काश ! विद्या का इलाज सालभर पहले ही चल जाता, लेकिन बीता वक्त हाथ नहीं आता । देखें, अब दवाओं का कितना असर होता है ।

बहू–बेटी

विजय पाल
टी.बी.एच.वी., सरकारी
अस्पताल एम्स बल्लभगढ़

डाट्स की दवा मरीज को सप्ताह में 3 बार मैं अपने सामने बैठाकर खिलाता हूँ–मंगलवार, बृहस्पतिवार व शनिवार। मंगलवार सुबह के 10 बजे थे। यानि दवा की खुराक खाने वाले मरीजों की भीड़ जुटनी शुरु हो चुकी थी। मैं बेहद व्यस्त था। एक नया कार्ड पढ़कर मैंने कहा, "मधु तुम्हे टी.बी. है। 6 महीने इलाज चलेगा।" टी.बी. का नाम सुनते ही मधु की सास बिफर गई। देखते ही देखते उसने तो अच्छी खासी हाय–तौबा मचा दी। वह बहु को कोसने लगी,"तू टी. बी. की बीमारी किधर से घुसा लाई हमारे घर में? टी.बी. तो हमारे खानदान में कभी किसी को नहीं हुई। तू मायके से ले आई है। हमारे साथ धोखा हुआ है–बीमार लड़की हमारे गले डाल दी तेरी माँ ने।"

"क्या मतलब?" मधु ने रोनी सूरत बनाकर पूछा "शादी से पहले तो मैं भली चंगी थी। आप जानती ही हो पिछले 5 महीने से मेरी तबीयत खराब चल रही है। बुखार आता जाता रहता है। शरीर टूटता रहता है। बार बार पेट में दर्द उठता है। वजन घटता जा रहा है।" उसकी बात को अनसुना कर सास तो चिल्ला चिल्ली करती चली गई, "हे भगवान! टी.बी. तो जानलेवा है। छुआ–छूत की बीमारी है। अब धीरे–धीरे मुझे और मेरे बेटे को भी निगल जायेगी। हमारे तो भाग्य ही फूट गए।"

टी.बी. के 10–15 मरीज चुपचाप बैठे तमाशा देख रहे थे।

उसका हर वाक्य मेरे कानों में जहर की बौछार की तरह था। मुझसे रहा न गया। मैं कुर्सी से उठा और चिल्ला कर बोला, "खामोश"।

सन्नाटा छा गया। फिर मैं सास से बोला, "क्या ऊल–जलूल बोल रही हो अम्मा। अपने अंध–विश्वास को छोड़ दो। दकियानूसी गलत धारणा को मत फैलाओ यहाँ। जमाना बदल चुका है। टी.बी. का इलाज है, यकीनन है। यह

अब जानलेवा बीमारी नहीं है।"

सभी चुपचाप सुन रहे थे। सो मैं बोलता गया, "केवल फेफड़े की टी.बी. के कुछेक मरीज ही बीमारी फैलाने में सक्षम होते है—वे कि जिनकी बलगम में टी.बी. के कीटाणु जा रहे हों। यानि जो बलगम की जाँच में "स्पूटम पॉजिटिव" पाए जायें। सही इलाज से उनकी बलगम भी जल्दी ही कीटाणु रहित (शुद्ध) हो जाती है तथा फिर कोई संक्रमण नहीं होता।" थोड़ा रुककर फिर मैंने कहा—

"फेफड़े को छोड़, जब टी.बी. दूसरे अँगों में होती है तो एक व्यक्ति से दूसरे को नहीं फैल सकती । " सास भौच्चकी सी मेरी ओर देख रही थी ।

"मधु के पेट में आँतड़ी की टी.बी. है। इससे तुम्हें रत्ती भर भी खतरा नहीं।

याद रखो टी.बी. का कीटाणु केवल हवा के जरिये से फैलता है। जब मधु को फेफड़े की बीमारी ही नहीं, खांसी ही नहीं तो संक्रमण का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। तुम्हारी बहू बेचारी का क्या दो ा है? टी.बी. एक बीमारी है। पति—पत्नी, माँ—बाप, बहू—बेटी किसी को भी हो सकती है। बस अब लगकर 6 महीने इसे डॉटस की दवा खिलाओ।" बुढ़िया को शायद मेरी बात समझ में आ गई। क्योंकि आने वाले 6 महीने बुढ़िया ने ठीक ऐसा ही किया। वह खुद सप्ताह में तीन बार बहू के साथ आती, अपने हाथों से उसे दवा खिलाती। आखिरकार उसकी सेवा रँग लाई। उसकी बहू मधु बिल्कुल ठीक हो गई। आखिरी खुराक लेने जब वह आई तो सास बोली, "विजय बेटा, अभी तक नाराज है मेरे से ?"

मैं बोला, "नहीं अम्मा!जिस तरह से तुमने अपनी बहू की सेवा की है, मैं बहुत खुश हूँ और हैरान भी हूँ।"

"बेटा, तैने जब धमकाया था उसी दिन मैंने ठान लिया था कि आज से मधु मेरी बहू नहीं, बेटी है। "

कसूर

सत्यबीर सिंह नर्वत
एस.टी.एस.

टी.बी. विभाग के अपने दफ्तर में अचानक मेरी नजर एक छोटे से लड़के पर पड़ी जोकि अजीब तरह से मुँह छिपाये हमारे दरवाजे से चिपका खड़ा था । "अरे, ये बच्चा कौन है ?" उसने कोई जवाब न दिया । उठकर मैंने अपने हाथ से उसका मुँह ऊपर उठाया तो मैं हैरान रह गया । उसका चेहरा आँसुओं से भरा पड़ा था । वह सिसकियाँ ले रहा था जिससे उसका शरीर काँप रहा था । "अरे बेटे क्या हो गया"? मैंने पूछा । उससे उत्तर देते ना बन पड़ा । बस हाथ में पकड़े रोल किए हुए कुछ कागज मेरी तरफ बढ़ा दिये । मैंने देखा दूसरे हाथ से वह पेट को दबा रहा था । "पेट दर्द है क्या" ? मैंने पूछा । वह बोला,"नहीं, भूख लगी है" । मैंने उसे पचास रुपये देते हुए बाहर केन्टीन से खाना खाकर वापिस आने को कहा ।

इतने में मैंने उसकी फाईल पढ़ी । बीती रात से हमारे बी.के. अस्पताल के लावारिस वार्ड में भर्ती था । उसका नाम यामीन (पिता नौशाद, माता शहनाज) इलाहाबाद, यू.पी. की किसी झोपड़ पट्टी में रहने वाला था । बाप नशे में रेल से कट गया था और हाल ही में माँ टी.बी. से चल बसी थी । वह महज 10 साल की नन्हीं सी जान अकेला रह गया था और उसके ऊपर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा था । उसके एक्स–रे इत्यादि सभी टेस्ट टी.बी. घो ित कर रहे थे । डॉक्टर रमन कक्कड़ से सलाह मशविरा करके मैंने फौरन उसका टी.बी. का इलाज चालू करवा दिया – टी.बी. नं0 721/12 । अस्पताल की ही नर्सों ने उसे नये कपड़े दिलवा दिए । कुछेक दिनों में उसकी अस्पताल से छुट्टी हो गई और वह वापिस ओल्ड फरीदाबाद में कुछ अन्य बच्चों के साथ बड़ी मस्जिद वाली झोपड़ पटटी में रहने लगा और कबाड़ा बीनने लगा । जब भी मैं उन बदबूदार गलियों में उसका हालचाल जानने जाता तो मेरे मन में एक टीस सी उठती । मेरे दिल में उस बालक को उस नरक से आजाद करवाने की प्रबल इच्छा होती । बहुत सोच विचार कर तथा अपनी पत्नी से सलाह कर मैंने यामीन को एक दिन कहा,"तुम चलो मेरे साथ । हमारे गाँव में मेरे खेत में टयूबवैल के बाजू वाले कमरे में आराम से रहो । मेरे बच्चों के साथ खाओ, पीओ, खेलो व स्कूल जाओ । मैं सारा इंतजाम कर दूँगा।"

यामीन ने कहा, "जी अगले हफ्ते चलूँगा ।" समय बीतता गया, वह न नकुर करता रहा । यामीन मेरे साथ चलने को कतई तैयार नहीं हुआ । वह वहीं अपनी दुनिया में खुश था । मुझे बहुत हैरानी थी की इतनी अच्छी पेशकश को वो क्योंकर ठुकरा रहा था । बाद में उसके पड़ोस के एक बुर्जुग ने मुझे इसका असल कारण बताया,"वह मुसलमान है तथा तुम हिन्दू ।" मैं दंग रह गया । हमारे लिए क्या हिन्दु, क्या मुसलमान। हमारा तो बस पेशा है – मानव सेवा । और तो और, टी.बी. का कीटाणु भी धर्मों के भेदभाव के पचड़ों में नहीं पड़ता – सबको एकसा दबोच लेता है ।

यामीन का इलाज अब पूरा हो चुका है। वह काफी स्वस्थ दिखता है । मेरे मन में रह–रह कर एक सवाल उठता है, "उस नन्हीं सी जान का "कसूर" क्या था कि उसे धरती पर पाँव रखते ही मुसीबतों का पहाड़ झेलना पड़ा ।"

व्यस्त डॉक्टर

राजकुमार शर्मा
सीनियर टी.बी. लैब सुपरवाइजर
बी.के. सिविल अस्पताल

करीब तीन महीने से साधना की तबीयत खराब चल रही थी। खाँसी व बलगम ठीक होने को नहीं आ रहे थे। बार–बार बुखार आ–जा रहा था। भूख बहुत कम लगती थी, जिससे वह बेहद कमजोर और दुबली होती जा रही थी। जब गाँव के डॉक्टरों की दवा से उसको कोई आराम ना मिला तो वह फरीदाबाद शहर में अपने चाचा के घर आ गई। उसी दिन चाचा उसको अपने फैमिली डॉक्टर के प्राइवेट क्लीनिक में ले गये। उस डॉक्टर ने खून की जाँच व छाती का एक्स–रे कराया तथा साधना को कुछ दवायें लिख दी जो उसने पास के कैमिस्ट से खरीदीं और खानी शुरु कर दी। ना साधना ने और न ही उसके चाचा ने प्राइवेट डॉक्टर से बीमारी के बारे में कोई पूछताछ की और ना ही उस डॉक्टर ने उन्हें कुछ बताने का कष्ट किया। वैसे भी डॉक्टर साहब के पास मरीजों की लंबी लाईन थी, उनके पास फुर्सत ही कहाँ थी।

दवा से साधना को थोड़ा सा आराम मिला और उसने अपने आप केमिस्ट के पास जाकर दस दिन की दवाई और खरीद ली। प्राइवेट डॉक्टर ने भी हर बार चुपचाप बस वही दवाईयाँ खाते रहने की सलाह दी। इस तरह साधना अपने आप उसी केमिस्ट से करीब दो महीने तक दवा खाती चली गई। उसका खाँसी, बुखार बिल्कुल ठीक हो गया, और उसका वजन भी कुछ बढ़ गया।

तबीयत ठीक महसूस होने पर अपने चाचा, चाची से इज़ाजत लेकर वह वापिस अपने गाँव चली गई जहाँ पंद्रह दिन के अन्दर उसका रिश्ता तय हो गया। चट–मंगनी पट शादी। देखते ही देखते वो ससुराल के लिए रवाना हो गई।

कुछ महीनों बाद में वह दोबारा बीमार रहने लगी। वही खाँसी, बुखार और वजन का घटना शुरु हो गया। ससुराल वालों ने उसकी जाँच कराई पता चला कि टी.बी. है। इतना ही नहीं जब उसने फरीदाबाद वाले पिछले प्राइवेट इलाज की पर्ची दिखाई तो पता चला कि उसके चाचा का फैमिली डॉक्टर भी

उसको टी.बी. की ही दवा दे रहा था – उसे बिना बताए।

टी.बी. का नाम आते ही ससुराल वालों का व्यवहार बिल्कुल बदल गया। सब उससे दूर–दूर रहते। कोई बात न करता। उसका पति उससे नफरत सी करने लगा। आखिरकार बहुत मायूस होकर बेचारी वापिस अपने मायके चली आई। उसके चाचा फौरन अपने साथ फिर से फरीदाबाद लिवा लाए। सीधे बी. के. सरकारी अस्पताल, फरीदाबाद में मेरी लैब में मुझसे मिले तथा साधना की सारी राम कहानी मुझे सुनाई। मैंने साधना को अस्पताल के टी.बी. विशेषज्ञ डा0 रमन कक्कड़ को दिखा दिया। उसकी जाँच हुई तो बलगम में कीटाणु पाये गये। उसको फौरन टी.बी. का क,ख,ग नामक पुस्तक दी गई जो उसने पार्क में बैंच पर बैठकर 2 घंटे के अन्दर पूरी पढ़ डाली। साधना को अपनी बीमारी के बारे में सब कुछ विस्तार से पता चल गया। टी.बी. क्या है ? इसके लक्ष्ण क्या हैं ? इसकी रोकथाम कैसे की जाती है तथा इसके ईलाज के दौरान क्या–क्या गल्तियाँ नहीं की जानी चाहियें इत्यादि।

सबसे भंयकर गल्ती है:

''अधूरा इलाज'' जो कि अन्जाने में उससे हो चुकी थी। उसे बहुत दुख था कि पिछले प्राइवेट फैमिली डॉक्टर ने उसे बिना बताये ही उसका टी.बी. का ईलाज करने की कोशिश की जिससे वह अपना ईलाज पूरा नहीं कर पाई। काश, वह डाक्टर उसे साफ साफ बता देता कि उसे टी.बी. है तो वह बीच में ही इलाज अधूरा नहीं छोड़ती। अब ना केवल उसे नये सिरे से दोबारा 8 महीने लंबा ईलाज करना पड़ा बल्कि ससुराल में कितनी बेइज्जती का सामना करना पड़ा। खैर, देर आए दुरस्त आए। उसने लग कर 8 महीने ईलाज किया पूरी तरह से स्वस्थ हुई। इलाज के दौरान उसने टी.बी. की बहुत सी जानकारी बटोरी व दूसरे मरीजों व उनके रिश्तेदारों से आदान प्रदान किया। एक दिन अचानक उसका समझदार पति आया और उसे वापिस ले गया, जहाँ वो खुशी–खुशी रहने लगी।

देर सवेर

पकंज
एच.आई.वी. काऊँसिलर

"डा0 साहब, जुदाई का दर्द नहीं सहा जा रहा।" कहते हुए रमेश फूट–फूट कर रोने लगा। कई महीनों की असफल कोशिशों के बाद आज न चाहते हुए भी उसने ठीक वैसा ही किया जैसा मैंने समझाया था। एक प्रकार से उसके दुख का मूल कारण मैं था।

"कहीं मैंने गलत सलाह तो नहीं दे डाली ?" रह रह कर मुझे यही डर सता रहा था।

बात 4 महीने पुरानी है। रमेश को टी.बी. घोषित की गई थी। हमारे बल्लभगढ़ डॉट्स सेन्टर वालो ने इसे मेरे पास भेजा था एच.आई.वी. टेस्ट के लिये–जो यह कराने को कतई राजी नहीं था।

"मैं एच.आई.वी. का टेस्ट क्योंकर कराऊँ ? बस टी.बी. की दवा दे दो जी," वह बार–बार दोहराता जा रहा था। मैंने उसे समझाया, "जिस व्यक्ति को एच.आई.वी. संक्रमण हो, उसे टी.बी. लगने का खतरा बहुत ज्यादा होता है।"

रमेश अड़ गया और बोला, "लेकिन टी.बी. से एच.आई.वी./एड्स का क्या लेना देना ?" मैंने उसे बताया, "एच.आई.वी./एड्स के मरीज देर सवेर टी.बी. से पीड़ित हो ही जाते हैं। ऐसे में केवल टी.बी. का इलाज लेने से कुछ दिन तो सही लगता है लेकिन क्योंकि एच.आई.वी. की जाँच नहीं कराई और अगर एच.आई.वी. संक्रमण भी है तो स्थिति फिर से गंभीर बन जाती है। टी.बी. का मरीज अगर शुरु में ही एच.आई.वी. की जाँच करा ले तो आने वाली बेवजह विपदा से बचा जा सकता है। मामूली सा खून का टेस्ट करवा ही लिया जाये–क्या बिगड़ता है ?"

बड़ी मुश्किल से रमेश माना। टेस्ट हुआ। बद्किस्मती देखिये–उसे एच.आई.वी. की बीमारी भी निकल आई। यानि एच.आई.वी. संक्रमण होने से शायद उसकी रोग प्रतिरोधक शक्ति कम हो गई थी जिससे टी.बी. रोग को हावी होने का मौका मिल गया था। मैंने उसे सारी सावधानियाँ बताईं। बातों–2 में उसने बताया कि उसका अपनी पड़ोस में रहने वाली नीलम नामक युवती से प्रेम प्रसंग जारी है तथा कुछ महीनों में शादी होने वाली है। वह नीलम से बहुत प्यार करता है तथा काफी ना–नुकुर के बाद दोनो परिवार राजी हुए हैं।

मैंने खूब सोच विचार कर रमेश को सलाह दी, "शुक्र है, अभी शादी नहीं हुई। नीलम से सम्बंध तोड़ दो वर्ना उसका जीवन बर्बाद हो जायेगा।"

बस इसी कार्य को वह आज अंजाम देकर आया था। सारी राम कहानी सच–सच बताकर अपनी प्रेमिका को शादी से इंकार करके आया था। इसलिए बेचारा रमेश बहुत दुखी था। उसे बच्चों की तरह रोता देखकर मैं भी बहुत दुखी था। अपनी बेबसी को मैं ही समझ सकता हूँ।

पीढ़ी दर पीढ़ी

विरेन्द्र कुमार
एस.टी.एस. मोहना

"30 साल पहले मेरी घरवाली अपने मायके से ही जैसे दहेज में लेकर आई थी टी.बी., होडल से शायद उसके किसी रिश्तेदार को थी। शांति बहुत बीमार रही। माँ की सेवा करते–2 बारी–2 मेरे दो बेटों – रामप्रसाद तथा चन्द्रपाल को भी यही रोग लग गया और देखते ही देखते तीनों एक के बाद एक इसी बीमारी से चल बसे।" मैं चुप रहा । कहने को मेरे पास कुछ नहीं था।

फिर सुखराम बोला, "मुसीबतों मुसीबत की कड़ी अभी जारी ही थी कि तीसरे बेटे सूरज को भी लग गई । और अब मुझे । शुक्र है हम दोनों दवा दारु से अब स्वस्थ हैं ।" सुखराम बाबा की राम कहानी सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ । गरीब टी.बी. के मरीजों का तो हाल आज भी बेहाल है । पुराने जमाने की ही तरह आज भी उनकी पीढ़ी दर पीढ़ी इस नामुराद बीमारी से बर्बाद होती चली आ रही है।

हमारे देश ने बहुत प्रगति की है। लेकिन अफसोस, प्रगति के बड़े–बड़े दावे सुखराम के परिवार को छू भर भी न पाए थे । इस परिवार के लिये तो ये बिल्कुल खोखले ही साबित हुए थे।

मैं इन्हीं सोचों में खो गया। लेकिन किसी आवाज से मैं चौंक गया। ताऊ हुक्का गुड़गुड़ाने लगा था।

ज्वालामुखी

अख्लाक खान
एस.टी.एस., पल्ला

भीड़ी–भीड़ी तंग गलियाँ । दोनों तरफ गंदी–2 नालियाँ । जहाँ देखो वही कचरे के ढ़ेर । दुर्गंध से दम घुट रहा था । मुझे पप्पू पर बहुत गुस्सा आ रहा था जो दवा छोड़कर, डिफाल्टर होकर घर बैठ गया था । मुझसे ज्यादा गुस्सा तो शायद मेरी बुलेट मोटरसाईकिल को आ रहा था । जोकि ऊँची–2 फट–फट कर फुँकार रही थी उन संकरी गूंज भरी गलियों में ।

आखिरकार पप्पू का छोटा सा कमरा मिल ही गया । जब दरवाजा खुला तो मैंने देखा पप्पू बहुत जोर–जोर से हँस रहा था और खांस रहा था । अपनी दोनों छोटी बहनों से मजाक, हँसी ठट्ठा कर रहा था । चुँकि पप्पू की बलगम की रिपोर्ट में कीटाणु मिले थे इसलिए उसे इस बंद कमरे में अपनी छोटी बहनों के साथ तो होना ही नहीं चाहिए था । जाहिर है उसने मेरी सलाह "बाहर खुले में रहना" नहीं मानी थी । मेरा मन किया कि एक जोरदार थप्पड़ जड़ दूँ । लेकिन मैंने अपने अन्दर के ज्वालामुखी पर जैसे तैसे काबू पाया तथा मैं बेहद विनम्रता से बोला,"पप्पू भैया, तुम ईलाज छोड़कर क्यों बैठ गए हो ? बार–2 ईलाज बीच में छोड़ देने से टी.बी. की बीमारी एक भयंकर रुप ले लेती है जोकि लाईलाज हो सकती है, जिसे एम.डी.आर. कहते हैं ।" पप्पू बस हँसता रहा ।

फिर मैं उन तीनों को लेकर उनकी छत पर खुले में जा बैठा। पप्पू के मुँह पर उसकी बहनों द्वारा एक रुमाल बंधवाया तथा उसका बिस्तर वहीं ऊपर छत पर बिछवा दिया। उन तीनों को टी.बी. का अपना रटा रटाया पाठ तोते की तरह पढ़ कर सुना डाला। पप्पू बीच–2 में खाँमखा जोर से हंस देता और मेरी मुठ्ठियाँ फिर गुस्से से भिंच जाती। हालांकि मेरे दाँत भिंचे लेकिन ऊपर से मैं बहुत शांति से कहता, "अपना तो जीवन बर्बाद कर ही रहे हो अपनी दोनों बहनों को भी खतरे में झोंक रहे हो। पप्पू जी, कृपया ऐसा मत करो।"

अब जैसे तैसे पप्पू ने पल्ला पी.एच.सी. सेंटर आकर दवा खानी शुरु तो कर दी है। भगवान जाने अब आगे ऊँठ किस करवट बैठे।

काश ! आप पहले मिले होते

हरीश कुमार
एस.टी.एस. पाली

मैंने अपनी चमचमाती मोटर साईकिल को किक मारी और अपनी पाली की डिस्पेन्सरी से निकल चला । आज मेरी मंजिल था विजेन्द्र नामक टी.बी. के मरीज का घर जो कि अत्यंत प्रदूशित क्रशर जोन में पड़ता था । चारों तरफ पर्यावरण में इतना गर्दा था कि मैंने सोचा फेफड़े की आधी बीमारियाँ तो इस प्रदूशण से ही पनपती होंगी । मैंने उसके घर पहुँचकर विजेन्द्र से पूछा, "कैसी तबीयत है ? उसने जवाब दिया अभी तो खाँसी, बुखार में थोड़ा आराम है।

मैंने उसे समझाया, "बस कुछ भी हो जाये दवाई बीच में मत छोड़ना ।" उसने कहा, "बिल्कुल नहीं छोडूँगा, डॉ0 साहब, मुझे भी मरना है क्या ?" मैंने हैरान होकर पूछा, "ऐसे क्यों बोल रहे हो, विजेन्द्र ?"

विजेन्द्र एक मिनट के लिए बिल्कुल चुप हो गया । उसके चेहरे पर बहुत उदासी सी छा गई। उसने फिर कहा, "डॉ0 साहब ये मनहूस टी.बी. की बीमारी मेरे पाँच बड़े भाईयों को निगल चुकी है – जयंती, कल्लू, महेन्द्र, टुल्ला और नोझा। बस 6 भाईयों में से मैं अकेला बचा हूँ।" मैंने उसे प्यार से समझाया, "विजेन्द्र बिल्कुल चिंता मत करो । मैं पूरा जोर लगा दूँगा कि तुम ठीक हो जाओ। अब कुछ मत सोचो"।

इस पर विजेन्द्र के चेहरे पर मुस्कान आ गई और वो बोला, "मैं तो ये सोच रहा हूँ कि आप मुझे पहले क्यूँ नहीं मिले।"

आदत से मजबूर

विजय पाल
टी.बी.एच.वी., सरकारी
अस्पताल एम्स बल्लभगढ़

लड़का करीब 20–22 साल का था। दुबला–पतला और कमजोर। मुँह पर रुमाल बाँध रखा था। उसने दिल्ली के महरौली अस्पताल का रैफर फार्म मुझे दिया जिसमें उसे दूसरी श्रेणी का इलाज देना निर्धारित था।

मैंने पूछा, "पहले कहाँ से इलाज करवा चुके हो ?"

उसने धीरे से कुछ जवाब दिया जो मेरी समझ में नहीं आया। मैंने फिर पूछा। वो कभी किसी डाक्टर का तो कभी किसी और डॉक्टर का नाम बता कर टाल जाता। लेकिन उसकी आवाज कुछ जानी पहचानी लगी। तो मैंने कहा, "जरा रुमाल हटाओ।" वो झिझका और चुपचाप खड़ा रहा। मेरे बार–बार कहने पर भी न तो उसने अपने पिछले इलाज के बारे में बताया और न ही सूरत दिखाई। मुझे शक हुआ। मैंने झल्लाकर अपने हाथों से उसके रुमाल के पीछे लगी गाँठ खोल दी और रुमाल मेज पर रख दिया।

उसे देखकर मैं हैरान रह गया। वह लड़का कोई और नहीं हमारा पुराना मरीज विक्की था। मुझे बहुत बुरा लगा और दुख भी हुआ। मैने कहा "ऐसे जानबूझकर मुँह छिपाने से क्या होगा विक्की ? इलाज तो मैंने ही करना है तुम्हारा।"

विक्की बोला, "डा0 विजय साहब मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ। आपके बल्लभगढ़ के डॉटस सेन्टर में इसीलिए रुमाल बांधकर आया था कि आप मुझे पहचान ना पायें ।" उसकी आवाज में पश्चाताप था और आँखो में पानी था।

काश दो साल पहले जब विक्की मेरे पास पहली बार इलाज के लिए आया था (टी. बी. नं0 106/11) तो मेरी बात मानकर इसने अपना पूरा इलाज सही ढंग से 6 महीने तक किया होता। तो आज यह नौबत ना आती। पहला मौका ही सुनहरी मौका होता है। पहली ही बार टी.बी. को पूर्ण रुप से निपटा लेना चाहिए। पहली बार दवाई बढ़िया असर करती है व बीमारी जड़ से ठीक हो जाती है। पहली बार चूके तो समझो जीवन की खिचड़ी बनी। दूसरी बार दवाइयाँ उतनी असरदार नहीं

रह जाती। फिर उसके बाद तो धीरे–धीरे दवा जैसे पानी बन जाती है।

विक्की ने जब दूसरी बार (टी.बी. नं0 1197/11) कोर्स किया तब भी इसकी आदत नहीं सुधरी थी। जैसे कुत्ते की दुम कभी सीधी नहीं होती वैसे ही कुछ मरीज लाख समझाने पर भी इलाज पूरा नहीं करते। थोड़ा ठीक होने पर गायब हो जाते हैं।

आज विक्की का तीसरी बार इलाज चालू हो जाएगा। शायद बहुत देर हो चुकी है। कहीं दवाऐं इसके अन्दर छुपे कीटाणुओं पर बेअसर तो नहीं हो चुकी होंगी। इसी निराशा में मैं कब मोटरसाइकिल पर घर पहुँच गया मुझे कुछ याद नहीं।

विक्की तो केवल एक उदाहरण मात्र है । मैंने अपने कार्यकाल में अनेकों ऐसे लापरवाह मरीजों को बीमारी से बेवजह दुख पाते व मरते हुए देखा है जैसे –

इन छह मरीजो ने भी मुझसे तीन बार टी.बी. का डॉटस का इलाज लिया :–

1.	ब्रिजेश	टी.बी. नं0 91/09, 849/10, 941/11
2.	प्रवीण	टी.बी. नं0 902/09, 148/10, 866/11
3.	ब्रजकिशोर	टी.बी. नं0 531/09, 567/10, 1204/11
4.	गणेशीलाल	टी.बी. नं0 294/06, 2007, 1144/11, 635/12
5.	बिरम सिंह	टी.बी. नं0 659/09, 680/10, 839/11, /2013
6.	गुडडू उर्फ चन्द्रपाल	टी.बी. नं0 1331/10, 1479/11, /2013

यानि ये सब मरीज अपनी लापरवाही के चलते साल दर साल बीमारी से ही घायल रहे। इन्होने अपने परिवार वालों में कितना संक्रमण फैलाया होगा, समय ही बतायेगा। ऐसे ही कुछ मरीज धीरे–धीर लाइलाज (एम.डी.आर.) टी.बी. के केस बन जाते हैं। उनकी बलगम में ढीठ लाइलाज किस्म के कीटाणु होते हैं जो उस परिवार ही नहीं समस्त मानव जाति के लिए अभि ाप होते हैं।

कुत्ते की दुम

सुभाष गहलौत
डाट्स प्लस,
HIV सुपरवाइजर

"अब काफी ठीक है हमारा बेटा। इसको असल में ऊपरी चक्कर था । इसके पेट में लम्बी–2 सूईयें थी जो बाबा जी ने निकाल दी हैं । भाई साहब, इसको टी.बी. तो थी ही नहीं । चलो जो भी हो अब ये ठीक ठाक है ।"

मैं ताऊ की बात सुनकर, भौचक्का रह गया । मैं इतना ही कह पाया, "ठीक तो यह 3–4 महीने जो इंजेक्शन व दवाईयाँ चली हैं, उनसे हुआ है । अब रोको मत । टी.बी. का इलाज जारी रखो ।"

ताऊ बोला, "भैया आप समझते नहीं हो । बाबा जी ने हमें बता दिया था कि इस बच्चे को ना पहले टी.बी. थी, ना अब टी.बी. है, और ना ही आगे बनेगी । फिर काहे को गर्म दवाई खिलाऐं इसे ?"

मेरा सिर चकरा रहा था । ऐसी दकियानूसी सोच पूरे परिवार में व्याप्त थी। अब मैं किस–2 को क्या–2 समझाऊँ ? मुझे याद है दो साल पहले जब पहली बार इस लड़के का स्पूटम पॉजीटिव टी.बी. का डाट्स का ईलाज शुरु हुआ था, तो भी बहुत बहसबाजी के बाद केवल तीन–चार महीने ही दवा खाई थी।

फिर ढीठ बनकर ईलाज बीच में ही छोड़ दिया । पिछले साल दोबारा ईलाज चला लेकिन फिर अधूरा । इसी लापरवाही का नतीजा अब इसे लाईलाज यानि एम.डी.आर. टी.बी. का ईलाज चलाना पड़ा था । अब कुछ आराम भी है लेकिन ये ईलाज दो–ढाई साल चलेगा । अब ये लोग फिर वही नाटक कर रहे हैं और दवाई छोड़ दी है । सच ही है कि कुत्ते की दुम कभी सीधी नहीं होती।

उनकी इकलौती संतान का भविश्य मुझे बेहद अंधकारमय दिखाई देता है।

पल भर की काँऊसंलिग किसी का जीवन बदल सकती है

विजय पाल
टी.बी.एच.वी., सरकारी
अस्पताल एम्स बल्लभगढ़

मुझे बहुत चिंता थी। सुनील की बलगम की जाँच में कीटाणुओं की भरमार थी यानि स्पूटम 3 प्लस थी। यानि उसके परिवार के लोगों को संक्रमण का बहुत खतरा था। लेकिन सुनील था कि दवा चालू ही नही कर रहा था। इलाज दो हफ्ते से दुविधा में था कि हमसे डॉटस ले या वृन्दावन जाकर टी. बी. अस्पताल में भर्ती हो जाए। इसी उधेड़बुन में वो डॉटस की दवाई शुरु नहीं कर रहा था। वो आगे–2 और मैं पीछे पीछे। आज मेरा तीसरा चक्कर था बनियावाड़े का उसके घर का। मैंने ऐड़ी चोटी का जोर लगाके उसको समझाने और दवा का पत्ता खिलाने की कोशिश की लेकिन वो नहीं माना।

वह बोला, " आज से सोच समझ कर मैं कल आऊंगा आपके बल्लभगढ़ डॉटस सेन्टर में। जैसा आपने बोला HIV का खून का टेस्ट भी करवाऊँगा।" निराश हो मैं उसके घर से निकला। तभी मुझे एक तरकीब सूझी। मैंने HIV काउंस्लर श्री पंकज नागर को फोन मिलाया तथा सारी बात बता दी ताकि कल वो भी अपने तरीके से सुनील को समझाये।

भगवान जाने पंकज ने सुनील को कैसी घुटटी पिलाई? और कैसी काऊंसलिंग की कि उसका तो व्यहवार ही बदल डाला। सुनील खुद भागकर मेरे पास आया। दवा का पत्ता खाया और देरी के लिए माफी माँगी। बाद में वह एकदम आज्ञाकारी मरीज़ बन गया। धीरे–धीरे मेरा एक पसंदीदा मरीज बन गया। नतीजा जल्दी ही गाड़ी पटरी पर आ गई है और मुझे पूरा विश्वास है कि सुनील एकदम स्वस्थ हो जायेगा। उस दिन पहली बार मैंने यह महसूस किया कि अच्छी काऊंसलिंग से जमीन आसमान का परिवर्तन लाया जा सकता है। हर स्वास्थ्य कर्मी को समझाने के सही तरीके की इस कला में माहिर होना चाहिए ताकि मरीजों का ज्यादा से ज्यादा भला किया जा सके।

मेरे पूछने पर पंकज जी ने अपना गुर दिया, "बस मरीज को आने वाले वक्त की गंभीर स्थितियों के बारे में गिन–गिन कर बता दो। उस के ऊपर और उसके परिवार के ऊपर क्या–2 मुसीबत पड़ने वाली है–ठीक से समझा दो। वो एक दम मान जायेगा।"

टी. बी. क्या है

डा0 रमन कक्कड़
सम्पादक
(टी.बी. स्पेशलस्ट)
बी.के. अस्पताल, फरीदाबाद

टी.बी. यानि टयूबरकुलोसिस या क्षय रोग या तपेदिक की बीमारी एक फैलने वाला रोग है। भारत में हर 3 मिनट में 2 व्यक्ति इससे जान गँवातें है। इसका कारण है एक छोटा सा कीटाणु जो हवा के जरिये एक से दूसरे व्यक्ति में फैलता है।

टी.बी. के लक्षण :– लम्बी खांसी, लम्बा बुखार व वजन का घटना टी.बी. के लक्षण होते हैं । आम तौर पर ये लक्षण इतने मामूली और साधारण होते हैं कि किसी को शक नहीं होता है कि टी.बी. जैसी बीमारी शुरु हो चुकी है। जब भी खांसी, बुखार इत्यादि लंबे समय तक चलता रहे तो टी.बी. का शक करना चाहिए।

टी.बी. होने का खतरा किसे ज्यादा होता है ? :– 1.खाने पीने की कमी से जो लोग कमजोर हैं, गरीबी व कुपोषण का शिकार हैं उनमें यह बीमारी ज्यादा पनपती है। 2.शूगर (डायबीटीज) (मधुमेह)(शक्कर की बीमारी) के मरीजों को। 3. एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्ति तथा AIDS (ऐड्स) के रोगी को। 4.नशे की लत वाले को – बीड़ी, सिगरेट, शराब, गुटखा, तम्बाकू, चरस, गाँजा या ड्रग्स के इन्जैक्शन लगवाने वालों को।

फेफड़े की टीबी ही बीमारी के फैलने का जरिया है:– टी.बी. के 80 प्रतिशत मरीज तो फेफड़े की बीमारी से ग्रस्त होते हैं। फेफड़े की टी.बी. ही सबसे ज्यादा पाई जाती है और समाज के लिए सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। फेफड़े की टी.बी. का ऐसा मरीज जिसकी बलगम में किटाणु जा रहें हों (यानि वह स्पूटम पोजेटिव हो) इस बीमारी को दूसरों में फैला सकता है। इसलिये बलगम की सही जांच करना बहुत जरुरी है। सही इलाज से मरीज की बलगम से कीटाणु जल्द ही साफ हो जाते हैं और संक्रमण रूक जाता है। इसलिये तब तक ऐसे मरीज को सावधानी बरतनी चाहिए जैसेः– खाँसी करते समय मुँह पर रुमाल रखो। ज्यादा से ज्यादा समय बाहर खुले में बिताओ–जैसे पार्क में, खेत में, आंगन में, छत पर या किसी पेड़ के नीचे। बाहर खुले में खांसी के कीटाणु हवा में बिखर जाते हैं और धूप उनको नष्ट कर देती है। इसलिये बाहर ताजी हवा में संक्रमण का खतरा नहीं होता।

टी.बी. शरीर में फेफड़े के इलावा और कहाँ होती है? होने को तो टी.बी. सिर से पैर तक किसी भी अंग में हो सकती है । जैसे गर्दन की गाँठों में, पेट में, जोड़ व हड्डी में, चमड़ी पर, दिमाग में या माँसपेशियों में, जिगर में, गुर्दे में, आँतडियों में, फेफड़े या दिल की बाहरी झिल्ली में, आँख में, रीड की हड्डी में, पुरूष व स्त्री के गुप्तांगों में इत्यादि। फेफड़े को छोड़कर जब टी.बी. दूसरे अंगों में होती है तो यह एक से दूसरे को नहीं फैलती।

क्या टीबी का इलाज है? टी.बी. का इलाज है–यकीनन है । लेकिन थोड़ा लम्बा है। 6 से 8 महीने चलता है। मरीज को महीने दो महीने में ही काफी आराम महसूस होता है। कई बार वो समझता है मैं ठीक हो गया और बीच में इलाज छोड़ देता है जोकि एक भारी भूल है। टी.बी. की जड़ गहरी होती है और इलाज पूरा न करने से कुछ महीनों में बीमारी दोबारा उभर आती है।

पढ़ कर पुस्तक वापिस करें !